Part-III Paper-VI unit-3 (Sec-A)

# "Oraon"

S. Mazumdar

ओरांव या उरांव कोल जनजाति समुह की एक प्रमुख उपजाति है। इनका निवास तत्कालिन बिहार, वर्तमान झारखण्ड के छोटानागपुर पठार से मध्यप्रदेश तक पाया जाता है। इनकी भाषा और संस्कृति द्रविड़ संस्कृति से मिलती जुलती है।

उरांव का अर्थ होता है घूमनेवाले लोग। प्राचीन काल में अपने घुमक्कड़ स्वभाव के कारण ये जंगलो में शिकार करते हुए भारत के उ० मैदानी भाग तक पहुँचे। बाद में पुनः द० पहाड़ों की ओर चले गए। इनकी अधिकतम संख्या छोटानागपुर के पठारी भागों में पाई जाती है। ये राँची के पूठारी भाग, पलामू, मध्यप्रदेश के सरगुणा और उ०प्रदेश के मिर्जापुर में सघन रूप से बसे हुए हैं।

**शारीरिक बनावट :-** इनका कद मध्यम वर्ग का होता है। त्वचा का वर्ण कत्थई या ताम्रवर्णी काला, सिर लम्बा, बाल घुँघराले, नाक चौड़ी और चपटी होती है। आँखे खुली हुई होती है और होंठ मोटे होते है।

**भाषा :-** उरांव लोगो की भाषा मुण्डा भाषा से मिलती हुई बिहारी भाषा है। साथ ही इसमें बांग्ला और हिन्दी का मिश्रण भी होता है, चूँकि अब अधिकांशतः ये खानों एवं फैक्टरियों में श्रमिकों के रूप में काम करते है अतः अन्य लोगो के सम्पर्क में आने से इनकी भाषा में भी परिवर्तन दिखता है।

**भोजन सामग्री :-** इनका सामान्य भोजन कृषि उत्पादित साग-सब्जी, अन्न तथा मांस व मछली होती है, ये माड़-भात और साग को अपना सामान्य भोजन कहते है, भात-मछली इनका पसंदीदा भोजन होता है, इनके समाज में चावल से बनी शराब जिसे हड़िया/मारेया का भी प्रचलन है, शादी, ब्याह या त्योहारो में भोजन में मांस का होना आवश्यक है।

**वस्त्र एवं आभूषण :→** हालांकि अब उराँव जनजाति भी समाज के बदलाव के साथ उनकी जिन्दगी में भी बदलाव आया है, पर पारम्परिक तौर पर उष्ण कटिबंधीय जलवायु के कारण सूती वस्त्र ही इनका पहनावा है, ये वस्त्र उराँव महिलाएँ तैयार करती हैं। पुरूष धोती, गमछा, चादर ओढ़ते हैं और महिलाएँ साड़ी पहनती है, गहनों का शौक उराँव महिलाओं में भी है, सोना चाँदी के अलावा, काँच मूँगा, पीतल, काँसा के गहने भी पहनती है, पुरूष कमर में "करधनी" पहनते हैं जिसमें चाबी का गुच्छा, बटुआ और तम्बाकू की थैली लटकी रहती है। वर्तमान में ये मिल के बने कपड़े भी पहनते हैं और ईसाई धर्म के प्रभाव से इनके जीवन में काफी बदलाव आया है।

**उपकरण, अस्त्र-शस्त्र :—** उराँव मुख्यत: कृषि प्रधान जनजाति है, कृषि के लिए लकड़ी का हल, फावड़ा, कुदाल, खुरपी आदि यंत्रों का उपयोग करते हैं। शिकार में तीर धनुष का व्यवहार पारंपरिक रूप में की जाती है, इनके घर में मिट्टी एवं विभिन्न धातुओं के बर्तनों की प्रधानता होती है, बोझ ढोने के लिए बैलगाड़ी, सोने के लिए खाट या बाँस की बनी चौकी का प्रयोग होता है।

**सामाजिक संगठन :—** उराँव जनजाति पितृसत्तात्मक परिवार आधारित होता है, बच्चे पिता के कुल या वंश का नाम धारण करते हैं, इनमें समगोत्रीय विवाह वर्जित है, इनकी भी कई उपजातियाँ हैं जो खनिज, जानवर या चिड़ियों के नाम पर होता है, परिवार में सम्पत्ति पर पुरूष का अधिकार होता है पर स्त्रियों को भी पर्याप्त सम्मान मिलता है, इनमें विवाह 18-20 को उम्र में होती है।

इनकी ग्राम व्यवस्था पंचायत पर निर्भर करती है, कई गाँवों को मिलाकर "परहा" या

पंचायत बनता है जिसके सभापति परहा कहलाता है। इनके समाज में मृतकों का दाह संस्कार और दफन दोनों प्रथाएँ प्रचलित है, फसल कटाई कटाई के समय उत्सव मनाए जाते है, देवी देवताओं के पूजन में पारिवारिक विश्वासों के अनुसार पूजन क्रिया होती है, यहाँ उत्सवों में गायन-वादन-नृत्य होते है। इनके राष्ट्रीय नृत्य को "अन्ना" कहा जाता है, कुछ क्षेत्रों में "सरहुल" नृत्य काफी प्रसिद्ध है, अब अधिकांशत: ये जनजाति ईसाई धर्म को अपना लिया है और शिक्षा के क्षेत्र में भी आगे बढ़ गए हैं।

आर्थिक क्रियाकलाप :— प्राचीन काल में उराँव शिकारी हुआ करते थे, लेकिन स्थायी रूप में बसने के बाद से ये कृषक बन गए और इनका प्रमुख क्रियाकलाप कृषि हो गया है, कृषि के अलावा ये मछली पकड़ना पशुपालन तथा अन्य काम जैसे सूत कातना, कपड़े बुनना चटाई बनाना इत्यादि भी करते हैं। इनकी स्थायी फसल चावल है जिसे ये वर्षभर में दो या तीन बार उगाते हैं।

अब काफी उराँव शहरों में मजदूरी, उद्योगों में श्रम करने के लिए अपने पारम्परिक व्यवसाय को छोड़ चुके हैं, शहरी क्षेत्रों के सम्पर्क में आने से ये अन्य कार्यों में भी रुची बढ़ाएँ हैं। इनमें शिक्षा का प्रसार होने से ये अन्य व्यवसायों में भी जाने लगे हैं।

—×—